

आखर री आंख सून

(कविता संग्रह)

राजस्थानी भाषा, साहित्य एव सस्कृति
अकादमी, बीकानेर
२
संयोग सू प्रकाशित

ਆਖਰ ਦੀ ਆਂਖ ਸੁੰ

ਸਾਵਰ ਦਝਾ

ਸਵਸ੍ਤਿ ਸਾਹਿਤਯ ਸਦਨ

सावर दइया

प्रकाशक स्वस्ति साहित्य सदन, रानी बाजार, बीकानेर 334001 / मुद्रक
एस० एन० प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 / सस्करण 1990 /
मोल पत्तीस रुपिया मात्र

AAKHAR RI ANKH SON (Poetry) Sanwar Daiya

Price Rs 35 00

विगत

आखर अखत आखर पुसव

रचाव 9/पारि खोल्ले म 10/आखर री आख सू 11/अरदास 12/क सू
कविता 13/कविता 14/दो ओळपा पछे 15/आखर अखत आखर
पुसव 16/तू आइजै 18/जिदगाणी दो रूप 19

टावर ई कयैला

अर अचाणचव 20/इक्कीसवी सदी 21/मन री नदी 22 ऊधो हुयोडो
रुख देख र 23/घारा रो घणियाप 24/हवभाग 25/जायसी री
पीठ 26/छळ 27/घाणो म जुल्या पछे 28/जीवण घुखतो छाणो 29/
केशव केशन अस कगे 30/बूबलो ठूठ अेव सखाय 31/अडबो अेव
लखाव 38/महर अेव बिम्ब 33/माटी सूखी माटी डूबो 34/
अपणामत अेव लायाव 35/रित खातर 36/पुटिये राजा रै नाव 34/
सुधी गाय 39/माई 40/टावर ई कयैला 41/मायली आख 43/सामे
महघा पछे 44/ये जाणो हो 45

रग रुडा दीठावा सागे

सिस्त्र्या अेव चितराम 46/भोर छोरी खातर 47/सूरज दडी 48
दिन 49/हिलो 50/जीत उच्छव 51/वाहमास होळी 52/रसियो
सूरज 53/ऊमर 54/भूखे री दीठ मे सूरज 55/पूयू-अमावस 56/
कठे ई रैवै 57/पूनम 58/अेव चाद तीन चितराम 59/चाद अेक
चितराम 61

हालताई याद है

पारै ताण 92/मन री आठ नैलेरी मे 63/अक चितराम ओ ई 64
इया ई आछी 65/सास लेवती रुन 66/जाणवारी 67/अेक ई ओळी
98/मूठ अचूक 69/सम्भाळ र राख सू 70/बडी आगळी चूसता 71/
म्ह आयो जणा 72/घडी हरख भरी 73/आ सास जिया 74/इण रम्मन
मे 75/अब तो आव 76/खुद रो काणद खुद बाचता 77/हाल ताई
याद है 78/आख केव तो ई 79

रचाव

हा ५५

जान लेवा है जरूर

आ पीढ

आ पीढ रचाव री

पण

जान लेवा गढी नै पछाड

रू-रू मे मुळक भरै

रचाव

रचाव

पीढ मे सुख रो नाम

साखी है

चूघावती मा रो चितराम

थारें खोलें में

वीटल्या रै मूण्डो लगावता ई
लखायो म्हनै
स्सो सुख अठे ई है

अमूजो
आघी
अर लू रा थपेडा
का ओळा बिरखा री मार
की नी कर सकै म्हारो
थारें खोलें मे म्हनै डर काई ?

म्है
चूषू घापू
चूषू घापू जगत
थारें वोवा मे
क्षीर सागर है मा ।

आखर रो आख सूं

प्रीत
ओल-छाने पळी
परखी म्है

आखर रो आख सूं

हूक
होळै-सी क उठी
सुणी म्है

आखर रो आख सूं

गाठ
मना माय पड़ी
देखी म्है

आखर रो आख सूं

अरदास

आभै री अणत कोरा ताई पूग
टावरा खातर चुगो भेलो कर
सिझ्या पाछो बावड सकू घूरसाळै मे
वा पाख दीजै म्हनै

जुगा सू अघाँ मे गम्योडा
सुखा रा मारग सोध सकू
भावी पीढ्या खातर,
वा आख दीजै म्हनै

नीतर ओ मालक !
म्हैर रै नावै
म्हैर कर र
कोई म्हैर मत करीजै
म्हारै माथै !

क सू कविता

बाप री जिन्दगी मे पोढ़—
क सू करजो
मा री आख्या मे सुपना—
क सू कमाई
भाया खातर भविष्य—
क सू कमठाणो
म्हारै वास्तै—
क सू कविता ।

कविता

मिठाव रा अनाम मिठाव
दरद हरद अर हो रा रागदो
उजागर वरन रा यूगो दूध

दिन रं उजाग म
मादुतागं रो मग धारघा पूजीजा
रा रं अघार में
मिठाव रा घूत पूमनिवा रा
माजीपाता उजारन री हिम्मा दूध

अघारें में गम्बोटा
गुग्गु रा मारग मोघ
जूगा गार्द
मोला सपीट देगुण री
हम दूध

तो लै
साबल हाल आ वरम
सम्मान अं पाना
भेळी वर मानव री पीठ
अर लिख कविता ।

दो ओलियां पछै

आपै जगल री कलम बणा
सातू समदरा री ले स्याही
घरती री बागद बरघो
म्है ई

आ सोच
हरि गुण अणत है
माड-माड थक जासू

पण देखो
दो अलिया माड
सोच-मागर मे डूब्यो—
अवै फाई लिखू ?
?

आखर अखत आखर पुसव

हा ५५

मै इण जोगो कोनी

थानै तिरपत करण खातर

चढाय सकू छप्पन भोग

हा ५५

मै इण जोगो कोनी

थारै सिणगार सारू

भेळा कर सकू माणक-मोती

हा ५५

मै इण जोगी कोनी

थारी पूजा वास्तै

थरप सकू कोई मिदर

पण

म्हारै मन रा मालक

सास-सास म्हारी

थारै नाव

थारै ई खातर

म्हारा आखर अखत

म्हारा आखर पुसव

होश सम्भाल्या पछै
जोडयो ओ ई धन
यारै ई चरणा अर्पित

कबूल करो—
अँ आखर अखत
अँ आखर पुसब

तू आइज

जद
ब्याहमेर घिर जावै
घनख अघारो
गमण लागै मारग
उजास ओढ र
तू आइजै

जद
सुरजी री आकरी किरणा सू
तपण लागै घरती
बापरण लागै अमूजो
विरखा बीदणी वण र
तू आइजै

जद
बुझण लागै
सासा रो दोवो
छूटण लागै तेल
नुवो जीवण लेय र
तू आइजै

जिन्दगाणी दो रूप

कठई तो
भाख फाटता ई
सोनलिया किरणा मे
गुलाब रै फूला मायै दमकतो
टोपा-टोपा ठैरघोडो पापी
आ जिन्दगाणी ।

अर कठई
अभावा री भट्टी मे
नितूखी जरूरता रै तवै मायै
टोपा-टोपा पढतो पाणी
आ जिन्दगाणी ।

अर अचाणचक

आभै मे उडत

पछी नै देख

मुळकू

हरखू

उच्छव मनावू

अर अचाणचक

आकळ-वाकळ हो जावू

अटकै म्हारी आख

आड लेय ऊभो

पारधी निजर आवै

म्हारी सास

ऊपर री ऊपर

हेठै री हेठै रह जावै ।

इक्कीसवीं सदी

साव उधाडी
साटणिया सायळा
काकडिये सा फाटता दूकीया
अर अँ थोफळ
आख्या रातीचोळ
जाणै छक'र पो हुवै हयकडी

जठे जावू
म्हारें गळें पडें
आ उफणती नदी
नाव पूछू तो अेक ई उयळो—
म्है इक्कीसवी सदी !
म्है इक्कीसवी सदी ! !

मन री नदी

आघी
बोळी
गूगी
छता लखणा री लाढी
आ मिजळी सदी

जगल सू जड्या
लोभ रा लाडू
काटा-बाटा खावा
ये-म्है-स्सै

कारखानै री सगली नाळ्या
गिधावतो पाणी
चिम-या सू निकळतो धूवो
अमूजतो आभो
घासतो खून थूकती हवा

मैला गाभा
मैलो तन
मैली आख
मैली मन री नदी ।

ऊधो हुयोडो रुख वेख'र

म्हारी जडा
जमीन मे कित्ती ऊडी है
आ चीतणियो रुख
आघो रै थपेडा सू
ऊधो हुयग्यो जमीन मायै

कित्ताक दिन रैवैला
तप्पो म्हारो डोल रुख ?

नितूकी बाजै
अठै अभाव-आघो
होळै होळै कुतरै
जडा नै जीव

अबै
ओ गुमान विरथा
म्हारी जडा
जमीन मे कित्ती ऊडी है ।

घोरा रो घणियाप

म्हारे च्यारुमेर
घोरा ई घोरा

घायोडा नै लखावै
सोनै वरणा

भूखा नै
पोळीय मे पडचै टावर-सा
आ घोरा रो घणियाप
म्हारी सासा मायै

आ तो
आरी मरजी
रोसै
का पोखै म्हनै ।

हत्भाग

गूगो गुह रा गीत गावे
बोलियो सरावे

सजी सभा मे
पागळो पग पम्पोळ बोल्यो—
म्है नाचसू ।

आघो आगे आयो
वाडो बोलतो—
थारो वाई ठेको लियोडो है
म्हने ई देखण द्यो ।

बळावत ।
वाठी झाल थारी कलम नै

जायसी री पोड

म्हें काळो
म्हें वाणो
म्हें कोझो

थाने हसता देखू तो लखावै
हाल मरघो बोनी
शेरशाह

म्हें माटी हो कदै ई
इण गत सू पैली
जाणता हुबोला थे ई
रचना पडरूप हुवै सिरजणियँ रो

म्हारी काणाई
म्हारी कोजाई
उणियारो है वीरो ई ।

છઠ્ઠ

લોગ કૈવ
તૂ જઠે દાત દેવે
ઘઠે ચિણા કોની દેવે
અર જઠે ચિણા દેવે
ઘઠે દાત

પણ મ્હને તો તે
દાત અર ચિણા દોનૂં દે દિયા

અવે
આ વાત ન્યારી હૈ
કૈ આ દાતા સૂ
ઐ ચિણા ચાવીજે કોની !

घाणी में जुत्या पछै

ऊमर रै जादूगरियै
कैसा रै कर न्हाखा
चादी री कळी

पाण आयोडै डील माथै
पड़ग्या सळ
ढीला हुय'र लटकग्या
डूगरिया उठाव

इण घाणी में जुत्या पछै
कुण जाणै किसी गळी
नाठग्या उमाव

सोवणा सुपना सजावती आख्या में
डेरो न्हाखो घरविद री चितावा
भात-भात री
राग-रागनिया री जागा
गीता में बसग्या
आटै-दाळ रा भाव ।

जीवण घुखतो छाणो

नित लावणो
नित खावणो
टीगरा रै मूत सू
गिघावतो बिछावणो
धीजतै जोवन रो
भरमास लेवण मिस
सो जावणो
धाकैलो उतारणो
भळै पछतावणो
आयै वरस
आगणै मे नुवो पावतो
कदैई रोवणो
कदैई गावणो
चाचड देवणियो ई
चुगो देसी
आ सोच मन बिलमावणो

म्हारी इण
सातरै तुका आळी
आडी रो अरथ पिछाणो
अँडो जीवण

?

केशव केसन अस करो

जतन करचा घणार्ई
रैवै इया ई
डूगरिया उठाव
ना छिटकै
ना पडै सळ

कायम रैवै पाण
तण्यो रैवै डील
जाणै धनुष-कमाण
साध्या सू की सध्यो ई

पण
बाळणजोगा केस
चुगली खावै
काच इरावै

कूबलो ठूठ अक सखाव

पीळीयें मे पडी
मादी मा दाई
रेत
गळघोडे गोडा आळे
अणकमाऊ याप दाई
खेत

इणी खेत मे
सास टूटत री आस दाई
कमाण हुयोडो ठूठ
ठूठ सू निवळघोडी दो डाळा

आख्या आगे पसरै दीठाव
जाणै हाथ पसार र
मागतो हुवै कोई कूबलो—

रुतराज ।
की तो म्हैर करो म्हारै मायें ई ।

अडघो अक लपाय

माथो कोनी
माथे री ठोड है
ऊघो मेल्योडो हाडो

डील
डाग रो टुक्डो
हाया री जागा डडिया

गाभा कोनी खाकी
पण तो ई
काई मजाल
पानडो ई चर लेवै कोई
थारै थका !

शहर अेक बिम्ब

बड़े शहरा रै
सकड़े कमरा मे
मिनखा कने

बैठा

सूता

ऊभा

मिनख

मिनख

मिनख

जाणै

दाव-दाव र भारी हुवै

जूनी अर अकारण फाइला
वोरा में ।

माटी सूखी माटी डूबी

माटी सूखी
वादल सूखा
साव सूखा सावण रा स्स रग-राग
पाणी बिना
मरै मिनख
गोठा करै गिरज काग

विरखा री बाट जोवती आरपा
रैयगी फाटी री फाटी ।

माटी डूबी
मिनख डूब्या
डूब्या सूरज-चाद
चौफेर तिर ल्हासा
ल्हासा नै ल्हासा ई देवै खाघ
बेथाग वरसी विरखा बाळणजोगी
बची कोनी
कोई चीज कठै ई किणी जोगी ।

अपणायत अक सखाय

नितूका

मिले-मुल्लके सोग

अढे-टाकडे

गनो निभावती

सास

रोजीना आवै-जावै

पण अठै

ना अपणायत

ना हेत

अँडी गत मे जीणो

जाणै

तपतै घोरा माथे

अत बिहूणी जात्रा

बी माथे

माठै मना चालणो

फाटघोडा जूता पँरघा

जिका मे

भरीजती रँवै

रेत ।

आ रेत थारी है
आ रेत म्हारी है
अर
था म्हा सू ई वत्ती
वारी है
रेत रै छेत मे जिवा
रेत रा रुख वण र ऊग
अर
पाछा रल जाव
इणो रेत मे

सगळा री है रेत
सगळा कर सके
इण री सोरम सू हेत

रेत माथे
घणियाप री बात विरथा

जे करे ई कोई
तो वो करे
रेत नै जीवै जिको
रेत नै पीवै जिको
तपत घोरा माथ
पैलडो विरखा पछै
उठत भभका न झेलै जिको
बलबलती लूवा रै थपेडा सू
खेलै जिको

आपा तो अळघा ऊभा
सोरम लेवा
मोको पड़े जणा
खाली ओळभा देवा

वरसा रा हेत
वरसा री प्रीत
कायम राखो

रेत री आई रीत
आ सीख
बदे नी देवे रेत
रेत खातर
किणी री गळो रेत

रेत खातर धारी म्हारी करणी
रेत री ओकात न
ओछी करणी है
आपणी तो खैर है ई ।

पुटिये राजा रै नाँव

आभो हेठे आ पडैला
ओ वै'म
रूडो है
रूपाळो है
साची बात आ
तू खिमता आळो है

इया ई सूतो रैइजै
टागा ऊची करधा
ओ म्हारा पुटिया राजा ।

नीतर
ओ आभो
घडद करतो हेठे आ पडैला ।
हेठे आ पडैला ॥

सूधी गाय

च्यारुमेर

मूगोछम धरती

मुळकता महकता घेत

ऊमर रं बीसवें पगोथियै ऊभ

पैलडें जापे सू उठ' र

आळस मरोडती

गोरडी कोई

रत्ती उजाड गे ई

ओळभो नी थाने

थे पोमीजो

मोदीजो

मारग मारग आवू

मारग मारग जावू

गाव चावी म्हें थारी

सूधी गाय

कठं ई विचरू

किणी नै कोई डर कोनी

म्हारें मूण्डें वध्योडी है

छोकी

म्हें थारी सूधी गाय ।

भाई

कूड-कूड
साच कूड—
भाई भुजा हुव
कूड कूड कूड
साच है फगत
हेत रे आगणै मे
घूड घूड घूड !

हुवै
हा SS हुवै—
ना कोई आगे
ना कोई लारै
मै अवे लो ई
सुखी हू
सोरो हू
म्हारो मन हेला मारै

भाई नै मरवाय
जिवा भाई
भीजाई रो नखरो भागै
अँडा भाई
(आगोतर री छोडो
इण जमार मे ई)
कोई वालन नै मागै ।

टावर ई कयंता

साटणिये धागा सू ई
फवळा है
रूपाळो है
सोवणो है
कारोगरा रो कूड

आत्मा दाई
अजर है
अमर है
अदीठ है
हाजरिया री हा

छळ छद रो बारोवार
रुके कोनी
चाल्यो आवे इयाई जुगा सू
लगोलग

मतलब री चासणी मे
कठा ताई डूब्योडी माख्या रे मूण्डे सू
कद सामे आवे साच ?
साच री भीत सू
भचीड खाया बिना खुले कोनी
शोक मे आधे हुयोडे
राजा री आख

जे कदैई
हसैला तो
टावर ई हसैला
जे कोई
साच कयैला तो
टावर ई कयैला
कै राजा साव नागो है ।

मायली आख

धूवै अरु भाप मे डूब्या
छापी छाणें हा म्हे—
पाकी रग जद पार खावै
गळी-गुवाड
भागलपुर वण जावै ।

उणी वगत
सळा भरी चामडी
अर घौळा केस वोल्या—
कूड कूड साव कूड
आख्या ही कठे
जिनको फोडी
अर जे फोडी ई हुवै
तो इचरज काई
जद आघा नै आघा करै आघा

ठीक है
आख ई देखे
आख हुवणो चाइजै
पण
आख तो माय चाइजै ।

सामें मडघा पछें

घर-घर ताम्पें हो

रू-रू

लुक्कण पातर

ना तो ही रजाई

ना लुगाई

सीनो ताण्या साम ऊभो हो

सीयाळो

वम्पकम्पी मे ई बिडविडो पायी

लुक्कण री छोड

साथळ ठोक्

सामें मडघो

सीया मरतो घवण लाग्यो

सीयाळो

ये जाणो हो

ये म्हानै

जब कोनी लेवण छो

ये जाणो हो

जे म्है

आराम सँ रैवण लाग्यो तो

धारी नीद

हराम हो जावैता ।

सिद्ध्या अंक चितराम

आभै मे पसरै

की ललासी

की पीळास

धोरा बँठयो म्है देखू

जडा मे जावतो सूरज

मन चितेरो

माण्डै चितराम

चन्नणिया साडी बाघ

आरती री थाली लिया ऊभी

मुळकती सुहागण रो ।

भोर छोरी खातर

अगूण मे सिद्धरी उजास
जाणें जवान, हुवती छोरी रं
उणियार भावती ओप

सिद्धरी सूरज
जाणें अवार-अवार घडवापोडो
सोनं रो नुवो टीको
भोर छोरी हुसो स्याणो जद
काम बासी

आ चीत
कुदरत मा ।

दिन

अगूण नगारो
सूरज ढवो

हुयै चोट
दसू दिशावा मे गूजै
आरती रा सुर
दिन हुयग्यो

सूरज दडी

भोर छोरी

रमै दडी

वा दडी

उछळ र

अगण आगणै पडी

खडी-खडी

देखै छोरी

गुडकै दडी

अर

गुडक्या ई जावै

होळै होळै

आधूण ढाळ कानी

दिन

अगूण नगारो
सूरज ढको

हुवै चोट
दसू दिशावा मे गूजै
भारती रा मुर
दिन हुयग्यो

हेलो

भोर छोरी रै
हाया सू छिटकग्यो
सिद्धर भरघो घडो

बिरछा माथै
चिडकल्या करण लागी
ची-ची ची-ची

चूल्हा जेत्या
पगा मे सुल्लबुल्लाट
अेक हेलो—
उठो
काम माथै हालो ।

जीत-उच्छव

रात जुल्मा री राजधानी
अधारो गुण्डा

मेकलो सूरज
जुझै
जीतै

मनाव जीत-उच्छव
अगूण किलै ऊभ
उडावै सिद्धरी गुलाल !

बारूमास होली

सूरज तो
रसियो जबरो
खेले होली

बारूमास

भाख फाटता ई
मारं पिचकारी
सिंदूरी किरणा री
दुनिया रै मूडे

चमक परा जागै
सूत्योडा लोग

मुळकै सूरज
हाथ मे लिया पिचकारी
नूतै—
आवो, खेला होली ।

रसियो सूरज

सूरज स्याणै
माड लिया दो-दो घर

भाय फाटता ई
अगुण गळी मे
भळै आसू
वैय र टुर जावै
दिन भर खटे
अर

आधूण गळी पूग
सिझ्या सुहागण सागै मुळकै
लेवै रातवासो
समदर महल मे

सूरज स्याणै
माड लिया दो-दो घर
जुगा सू निभावै
दोना नै !

ऊमर

ऊगतें सूरज री
सोनलिया किरणा
पत्तें माथें
ठेंरघोडो
पाणी री टोपो

आरया आगें उघटें
मामा री ऊमर
पत्त माथें ठेंरघोडो
पाणी री टोपो
समय ।

तापें मूरज
बधें तावटो
पूरा रा थपटा
हि + पत्तो
अर
पाणी री टोपो ?
॥

भूख री बीठ मे सूरज

सिध्या ने तो
देख्यो ई हो आधूण
लाल लाल

लो
ओ भळ देखो
अगूण ई
होळै-होळै हुवै—
लाल लाल लाल

जरूरता रै हाथा
अभावा री छुरी सू
म्हारै दाई
ओ सूरज ई लाई
दोनू अगत हुवै
हलाल !

पून्तू-अमावस

पून्तू पुरसै
सागोपाग सिक्कोडो फलको

आभो घाप्योडो गोघो
नई भावै तो ई
कोर-कोर
खावै तोड तोड
पूरै पखवाडै

अमावस
आभै रै भायै बाघणजोगी
बा पुरस पूरै पखवाडै
कोर-कोर

ओ मिजळो
कैवै राजी हो हो'र—
की ओर की ओर
ओर
हा ओर ।

कठई रैव

सूरज सागै
समदर महल मे
रज्योछी रात
देखती रैयी
भोर रै घरा जावत
सूरज नै

जोवन गुमेज मे हूवी
नचीती बा
सावळ जाणै

कठई रैव ओ
पण
आपण हुवता-हुवता
आसी पाछो अठै ई
और कठै ढोयी इण नै ।

पूनम

रात रुपाळी नार
चाद टीको
आभो चूदडी
झिलमिल-झिलमिल कर
तारा मोती
अमर रहीजे
सदा सुहागण तू ।

अेक चाद तीन चितराम

गाभा लाल
टीकी लाल
माग मे सिंदूर लाल
रगा मे उछाळा मारें रगत लाल
पम्पोळ बीरा गाल
बो बोल्यो—

भळें नेंडो आव
घाथा रें बादला मे
लुकावू थनै
ओ म्हारा चाद ।

चाद सागी है
गोळ-गोल पीळो पीळो

इन्नै दीडघो
बिन्नै दीडघो
लीर-लीर गाभा
तपती सडक
पगा उवराणो
दिन भर घीस्यो गाडो
लुक्का सूखा टुककड चाबतो
आभं कानी कर आगळी
बो बोल्यो—

सिक्कयोडो फलको तो
बो लटकं बठ ।

चाद सागी है
गोळ गोळ पीळो-पीळो

दवा री शीशिया खाली
हीडचा करतो जिण मे
तोतो सुर

वो हीडो खाली
अवकानी पडचा रोवै रमतिया
आ देख

चिंता करै वाप—
औ चाद ई खूटंला
जिया छुटग्यो
पीळीयै मे छोरो ।

चाद सागी है
गोळ गोळ पीळो-पीळो

चांद अेक चितराम

म्हारें छोरें
आपरो ज्योमिट्टी-बावस खोल्यो
परकार बाढ्यो
कागद माथे
अेक वृत्त माड'र
बीमे पीळो रग भर दियो

बोल्यो—
पूनम रो चाद है औ
वतावो किसो क लागै ?

म्हैं बोल्यो—
लारलै दिना
पीळोयै मे लागतो
जिसो तै
अेकदम बिसो ई !

थारै ताण

अेक रूत हुवै
सोरम भरै मन में

मन में तू हुवै
तो पछै तू ई है काई
आ रूत

मुलकै फूल
पाकै फल
वाजै पत्ता
आलस मरोड़ि बेला
लखावै
चौफेर अेक संगीत
तू हुवै जणा मन में

थारै बिना
ई होणै रो अरथ काई
तू ई बतै

लै जाण
है थारै ताण
रूत रा रग रुडा ।

मन री आट-गलरी मे

थारे चेहरै मायै देखण खातर
अगूण मे पसरतो उजास

आडी टेढ़ी वाता कंबू म्है
कणार्ई-कणार्ई
आ तो म्हारी आदत है

अकर फीसँ तू
मताया मुळकै
आसू पूछली लुकै सीनै मे
हाथा रै बी सागी लटकै सागे
—आछी आदत है ।

इणी लटकै लारै गँलो म्है
अजै टाग राख्यो है
मन री आट गँलेरो मे
थारो बी चितराम !

अक चितराम ओ ई

काईं ठा काईं जची म्हारे
डायरी खोल राख्या सामें
अतस रा अँ आखर अमोला

सोच्यो—

राजी हुवैली तू
कालज री कोर ई तो ही
काळजै मे चौफेर

सुण परी

मुळकी तो सरी

पण उठती दोली

हाथा रँ सागी लटकँ सागै—

की काम तो आय कोनी

बैठा बैठा वाई गट्टी वाता

चुगवो करो ।

चाल रे जीवडा ।

वद कर डायरी

वा चितरामा भेली

अक चितराम ओ ई सही ।

इया ई आछी

आडो छहकाया विना ई
अेक दिन अचाणनक
म्है पूग्यो घरा

टावर पढे हा
वै बोल्या—बतलाया

कुण है कुण है
करती तू आयी रसोई सू

आटे सू भरघोडा हाथ यारा
लिलाड रो पसेवो पूछती
केसा नै लारै करती

देख म्हने
तू सोघण लागी ओढणियो

पण सुण
ऊभी रह घडो भर
ऊभी रह
इया ई आछी लागै तू ।

सांस लेवती रत

त वन हुव जणा
मूगाछम हुव विरछ
हाळा माथे बैठा पछीडा ई
गावै—वतळावै

वागा मे
फूल हुवै
फूला मे सोरम हुवै

तू सागै हुवै जणा
फागण—चैत रो गुलाबी ठण्ड हुवै
ठण्ड सू उपजती
हळकी-हळकी आच हुवै

सुण तो सरी—
जीवती-जागती
महकती-मुळकती
सांस लेवती रत है त्

जानकारी

छा हाया नै ठा है
कठै काई किन तेछ-गोछ है
होय-दिरछ

जै साला जानै
ठाले बूनी ठिक्कारयोही ठण्ट में
कठै साधै निवास

बौ जी जानै
मन री अझारी अनूवती घाटी में
धारी ओछू रो दीवो
मित्र करै उजाव ।

अेक ई ओळी

फल मागे वतळावतै भवरै न देख
सोद्यो म्है अरथ अेव

डाळ माथै
गटर गू-गटर गू सुणी
पुरता हुयो अरथ सागी

अवै म्हारै सामै
चाद है बादळ है
चूड्या री खणक है
काजळ है
टीकी है

आ रुत
रुडी रूपाळी नीकी है
सूगना सू ई बकार देखो भलाई
उयळो सागी—

अवार नई
अठै नई
इया नई
विया नई

जाणै रिवाड माथै
अटक्योडी हुवै सुई
अर वाजै अेक ई ओळी—
अवार नई अठै नई इया नई नई नई

मूठ अचूक

म्हे तो आ ई सुणो
बावड्या करे जोवन
दो पछे

पण
थारै कनै तो
अेक ई राग—
म्हारी कड दूखें
फावया मे लेवण खातर
म्हें गूथू जाळ
पण तू कद पजै

नट विद्या री जाणकार
नाड हिला र
मारै मूठ अचूक--
धोळा आयग्या
बावळी वाता करो ।

केशव !
बिन बावा सुण्या ई
म्हें मारा मन ।

सम्भाल र राख सूं

सिकती रोटी उथळता
होळी सी क चाख लेव तवो
म्हारी आगळी

आगळी माथें फालो
फालें मे पाणी
पाणी मे ऊचो आवें—
अक कवळ

अरे !
औ तो थारें उणियारें है
अवें म्है
केई दिना ताई
सम्भाल र राख सूं
औ फालो
औ कवळ
औ उणियारो
इणी उणियारें ताण
म्हारें चोफेर
ओळू-उजास !
अटूट विश्वास ॥

बढ़ी आगली चूसता

ठा पड़े अर पड़े ई कोनी
म्है कैवू जणा
अड जाव तू ई
ठा पड़े किया कोनी
पड ई है

पड़े ई है
देखलै तू खद
आटो ओसण मेल्यो है
स्टोव जगावण सू पैली
साग सुधारता सुधारता
चक्कू सू बढे आगली

आगली आवे मूण्डे मे
म्है चूसू
अर
चूस्या ई जावू
आरुषा आगे आय ऊभे तू
ऊभी-ऊभी मुळक
जाण पूछती हुवे—
कय
अवे ठा पडो नी ?

म्हें आयो जणा

अक दिन भवरो आयो
फूला बतळ करी कोनी

पेड री डाळ माथें
चिडो अक्लो ईं करतो रेंयो ची ची
चिडी सूर मे सूर मिलायो कोनी

हेलो पाडघो आभें
पण घरती बोली कोनी
बोली कोनी घरती जणा पछें
तू किया बोलती

उहाळें सू अमूज्योडी घरती माथें
बरस्या बादळ
पसवाडा माथ पसवाडा फोरण लागी
घरती

वी घडी
म्हें आयो जणा
मुळकती लाघी म्हाने तू ईं ।

घडी हरख भरी

अचाणचक आव हिचकी
वध जावें ओक अदीठ पुल
ईं खुणें सू वीं खुणें
देखू म्है—
बिन्नै सू भाजी आव तू
इन्नै सू म्है

दीच पुल
बाया भेटा हुवा आपा
मासा सागै गुथ जावें
सासा रा तार

घिर हुयोडो बगत
घिर ईं रैवें
आ घडी हरख भरी

ओ ईं उच्छव
ओ ईं लाखीणो तिवार
आपा मनावे वारम्बार ।

आ सास जिया

मन काचो क्यू करै बावली
अलघा हुया ई ठा पड़े
आपा कित्ता सागै हा

तू किसी जाणै कोनी
सागै रवै लोग
तो ई कित्ता अलघा हुवै
अक दूजै री सास सू

गल्लगली हुयोडी है तो काई
अंकर मुळक परी
आ मुळक थारी उजास म्हारै मारग रो

मोडै ऊभ विदा करतै
डावर नैणा री कोरा ठैरघोडै
पाणी री सोगन
महै कठैई रैवू
तू हरदम सागै हुवै म्हारै
सामै आ सास जिया ।

इण रम्मत मे

म्हें जीतू अर तू हारे
का पछे
तू जीत

अर म्है हारू
तो इण सू काई फरक पड़े ?

सुण म्हागी मरवण ।
आपणै बिच्चै
हार जीत रा दावा ई बिरथा

तू जीतणी चावै
तो जीत भलाई नित
म्हने तो हर कबूल रोजीना

म्है जाणू
इण रम्मत मे
हार ई जीत है ।

आबै तो आव

ठालीवूली ठिठकारघोड़ी ठण्ड
रू-रू मे जमगी

आ बरफ
किया पिघलै

अबै तो
घारै वोबा गढ मे ई
लाघ तो लाघै
की गरमास

जम्प्योड़ी सासा मे
की गति आवै
बाया भेटा हुया ई

आव
तू आव
अबै तो आव
म्हारी सासा री सागोतर ।

खद रो कागद खुद बाचता

गुलाबी कागद माथै
रातें रग लिखी अ ओळचा
मन राखै रातो रात रात भर

डाक मे घाल
फेरु वाचण रो सुख
क्यू गमावू

म्हारै कनै
म्हारो घन
फिर-घिर वाचू म्हे
म्हारी ओळचा
अरथावू अर लाजा मरू
हाय राम ।
म्है इत्ती लाजवायरी
इत्ती नागी-उघाडी

हाल ताई याद है

ठीक है

भूलणिया भूल्या हुवैला

राग

रग

छकड़ी

तीन चीज याद रैयी हुवैला

तेल

लण

लकड़ी

पण

म्हने तो

हालताई याद है

थारै अगा सू फूटती

फूला री सोरम

अर

थारै डील रो

निवायो परस

वा जकड़ी

सासा सागे गुत्थम गुत्था हुयोडी

बै सासा !

आख फच तो ई

वे शब्द कठै
जिका कर सकै
वखाण
सो टका साचो वखाण

म्हारी आख्या आगै
पसरयोडो है
कुदरत रो मदछकियो जोवन
अणहद रूप
इणी मद छकियै जोवन
अर अणहद रूप रो
अंक टुकडो
तू

साबळ देख्यो परख्यो
केई केई दफै
चढचो
उतरचो
डील रा डूगर
डील री ढळाद
गुजरचो गरम गुफावा सू
तावडें मे बैठचो
थारें केसा री ठण्डी छीया
सीयाळें मे सोघ्यो
वोबा गढ मे निवास

पण आज
लाय जतन तरघा ई
सामे बोनी आवे
सागी वान

आ होठा नै वाई ठा
देवण आग्री तो आय ही

तु वाई है
बही है
अवे आ आय कैवै तो ई
ठा पड़े ।

